



21

रघुकुल-रीति



बहुत समय पहले की बात है। अयोध्या में राजा दशरथ का राज्य था। एक दिन दरबार मंत्रणा चल रही थी तभी द्वारपाल अंदर आया। उसने सूचना दी कि महर्षि विश्वामित्र पधारे। महाराज दशरथ तत्काल अपना आसन छोड़कर खड़े हो गए। महर्षि की आगवानी करने की ओर बढ़े और उन्हें लेकर दरबार में आए।

महर्षि के स्वागत-सत्कार के बाद राजा दशरथ ने कहा, "आज्ञा दें महर्षिवर! मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" महर्षि ने कहा, "जिन! मैं जो माँगने जा रहा हूँ उसे देना आपके लिए कठिन होगा।" विश्वामित्र बोले। "आप आज्ञा दीजिए, महर्षि! मैं उसे करने के लिए तत्पर हूँ। बिल्कुल नहीं हिचकूँगा।" राजा दशरथ ने कहा "मैं एक यज्ञ कर रहा हूँ। अनुष्ठान लगभग पूरा हो गया है लेकिन दो राक्षस उसमें बाधा डाल रहे हैं। मैं जानता हूँ कि उन राक्षसों को केवल एक ही व्यक्ति रोक सकता है। वह कौन है। आप अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को मुझे दे दें ताकि यज्ञ विघ्न पूरा हो सके।" विश्वामित्र ने कहा। राजा दशरथ पर बिजली गिर पड़ी। वह अचकचा गए। उन्हें उम्मीद ही नहीं थी कि मुनिवर उनके प्रिय राम को माँग लेंगे। दशरथ चिंता में पड़ गए।



विश्वामित्र दशरथ की दुविधा समझ रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं राम को केवल कुछ दिनों के लिए माँग रहा हूँ। यज्ञ दस दिन में संपन्न हो जाएगा।" महाराज दशरथ पुत्र-वियोग की आशंका से काँप उठे। दरबार में सन्नाटा छा गया। दशरथ की दशा देखकर मंत्री चिंतित थे, चुप थे। महर्षि वशिष्ठ शांत थे। इतने में दशरथ काँप कर बेहोश हो गए। होश आया तो उन्होंने फिर जकड़ लिया। संज्ञाशून्य होकर दोबारा गिर पड़े।

किसी अनिष्ट की आशंका से सभी दरबारी सशंकित थे। वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे। महर्षि और महाराज के बीच संवाद में कुछ बोलना उचित भी नहीं था। मुनि वशिष्ठ चुपचाप रह कर महाराज दशरथ के पास खड़े हो गए।



थोड़ी देर बाद दशरथ की चेतना लौटी तो उठे। स्वयं को सँभालते हुए उन्होंने महर्षि विश्वामित्र से विनती की, "महामुनि! मेरा राम तो अभी सोलह वर्ष का भी नहीं हुआ है। वह राक्षसों से कैसे लड़ेगा? राक्षस मायावी हैं। वह उनका छल-कपट कैसे समझेगा? उन्हें कैसे मारेगा? इससे अच्छा तो यही होगा कि आप मेरी सेना ले जाएं। मैं स्वयं आपके साथ चलूँगा। राक्षसों से युद्ध करूँगा। मैं राम के बिना नहीं रह सकता, महामुनि! एक पल भी नहीं। आप राम को छोड़कर जो चाहे माँग लें, उसे मत ले जाइए।"

महर्षि विश्वामित्र ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। उन्हें अपने यज्ञ के नियम याद थे। क्रोध करने से यज्ञ खंडित हो जाता। अनुष्ठान अधूरा रह जाता। महर्षि विश्वामित्र बोले "आप रघुकुल की रीति तोड़ रहे हैं, राजन। वचन देकर पीछे हट रहे हैं। आप जानते हैं कि मैं स्वयं दुष्ट राक्षसों का संहार कर सकता था लेकिन मैंने संन्यास ले लिया है। अगर आप राम को मेरे साथ नहीं भेजेंगे तो मैं यहाँ से खाली हाथ लौट जाऊँगा।"

बात बिगड़ती देखकर मुनि वशिष्ठ आगे आए। महाराज दशरथ को समझाते हुए कहा – "राजन, आपको अपना वचन पूरा करना चाहिए। रघुकुल की रीति यही है। प्राण देकर भी आपके पूर्वजों ने वचन निभाया है, आप राम की चिंता न करें। महर्षि के होते उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" महाराज दशरथ की चिंता कुछ कम हुई पर मन अब भी खिन्न था। गुरु वशिष्ठ ने कहा, "महाराज, महर्षि विश्वामित्र सिद्ध पुरुष हैं। तपस्वी हैं। अनेक गुप्त विद्याओं के जानकार हैं। वह कुछ सोचकर ही यहाँ आए हैं। राम उनसे अनेक नई विद्याएँ सीख सकेंगे। आप राम को महर्षि विश्वामित्र के साथ जाने दें। राम को उन्हें सौंप दें।"

दशरथ ने मुनि वशिष्ठ की बात दुखी मन से स्वीकार कर ली लेकिन वह राम को अकेले नहीं भेजना चाहते थे। उन्होंने



विश्वामित्र से आग्रह किया कि वे राम के साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण को भी ले जाएँ। महर्षि विश्वामित्र ने महाराज दशरथ का यह आग्रह स्वीकार कर लिया।

राम और लक्ष्मण को तत्काल दरबार में बुलाया गया। महाराज दशरथ ने उन्हें अपने निर्णय की सूचना दी। दोनों भाइयों ने सिर झुकाकर उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

इसकी सूचना माता कौशल्या को दी गई। बताया गया कि राम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ वन जा रहे हैं। नितांत गंभीर माहौल में स्वस्तिवाचन हुआ। शंखध्वनि हुई। ढोल बजे। महाराज दशरथ ने भावुक होकर दोनों पुत्रों का मस्तक चूमकर उन्हें महर्षि को सौंप दिया। दोनों राजकुमार बिना विलंब किए महर्षि के साथ चल पड़े। बीहड़ और भयानक जंगलों के ओर। विश्वामित्र आगे-आगे चल रहे थे। राम उनके पीछे थे। लक्ष्मण राम से दो कदम पीछे। अपने धनुष सँभाले हुए। पीठ पर तूणीर बाँधे। कमर में तलवारें लटकाए।



अभ्यास



वार्ध

गहन	= गूढ़, गहरी	तत्पर	= तैयार
सिद्ध पुरुष	= वह व्यक्ति जिसे योगादि में सिद्धि प्राप्त हो गई हो	अनुष्ठान	= धार्मिक कृत्य
आशंका	= भय	संज्ञा शून्य होना	= बेसुध होना
बिजली गिरना	= सन्न रह जाना	सशंकित	= डरा हुआ
अनिष्ट	= अशुभ	खंडित	= अपूर्ण
सूचक	= सूचना देने वाला	संहार	= नाश, ध्वंस
खिन्न	= दुखी, उदास	बिछोह	= अलग होना, विरोध
आग्रह	= हठपूर्वक प्रार्थना	नितांत	= अत्यधिक
स्वस्तिवाचन	= मंगल पाठ	तूणीर	= तरकस



1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

- (क) राम कौन थे ?
- (ख) विश्वामित्र ने महाराज दशरथ से राम को क्यों माँगा ?
- (ग) विश्वामित्र अपना क्रोध क्यों नहीं व्यक्त कर रहे थे ?
- (घ) गुरु वशिष्ठ ने महर्षि विश्वामित्र के साथ रहने पर राजकुमार राम को होने वाले लाभों के बारे में महाराज दशरथ को क्या बताया ?
- (ङ) पाठ में आए नामों के लिए कुछ सम्मानपरक शब्द लिखे गए हैं। उन्हें छाँटकर नीचे लिखे नामों के सामने लिखिए—

विश्वामित्र —

दशरथ —

वशिष्ठ —

2. सोच-विचार : बताइए -

- (क) आपको किन-किन बातों पर क्रोध आता है ?
- (ख) क्रोध आने पर आप क्या करते हो ?
- (ग) क्रोध से आपको क्या हानि अथवा लाभ होता है ?
- (घ) किसी को कोई बात कब समझायी जाती है ?
- (ङ) आपको कब, किसने, किस बात पर क्या समझाया ?

3. भाषा के रंग -

- (क) शब्द एक जैसे, अर्थ दो -

नीचे कुछ शब्दों के जोड़े लिखे हैं, जिसके अर्थ अलग-अलग हैं। इन्हें इस प्रकार अपने शब्दों में प्रयोग कीजिए कि इनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।

कुल — कूल

गृह — ग्रह

वंश — किनारा

घर — आकाशीय पिंड जैसी पृथ्वी

(ख) नीचे लिखे शब्दों को सही वर्तनी में लिखिए -

वशिष्ट	-		राक्षस	-	
सन्यास	-		महर्षी	-	
आशीर्वाद	-		रिति	-	

(ग) अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

बिजली गिरना -

संज्ञा शून्य होना -

तुम्हारी कलम से -

विश्वामित्र के साथ राम व लक्ष्मण के जाने की इस घटना को अपने शब्दों में लिखिए।

अब करने की बारी -

(क) इस कथा पर अपनी कक्षा में अभिनय कीजिए।

(ख) इससे आगे की कथा ज्ञात कीजिए -

- अपने पुस्तकालय से पुस्तक लेकर
- टेलीविजन, कंप्यूटर अथवा मोबाइल फोन पर
- अपने बड़ों से पूछकर

मेरे दो प्रश्न : पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.
2.

इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा -

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

